

## कोई भी किडनी चलेगी

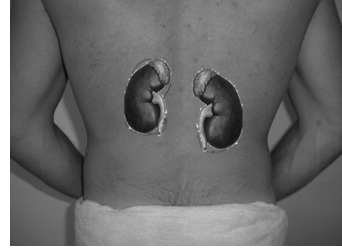
अंगों का प्रत्यारोपण बहुत ही सरल हो सकता है, यदि ग्रहणकर्ता को कभी अपने जीवन में प्रतिरक्षा तंत्र को दबाने के लिए कोई दवा न लेनी पड़े। मगर ऐसा होता नहीं है। जो अंग मैच नहीं हो पाने पर अस्वीकार कर दिए जाते हैं उनका क्या किया जाए। इसकी कुंजी डोनर की अस्थि मज्जा में छुपी है।

बोस्टन के मैसाचूसेट्स जनरल हॉस्पिटल के डेविड सैक्स और उनके साथियों ने एक तकनीक खोजी है। इसके अंतर्गत उन्होंने 4 से 5 रोगियों में असंगत किडनी का सफलतापूर्वक प्रत्यारोपण किया और ये रोगी इस नए अंग के साथ बिना कोई दवा (प्रतिरक्षातंत्र को दबाने के लिए उपयोग की जाने वाली दवा) लिए 6 महीने से लेकर 4 साल तक स्वस्थ रहे। उन्होंने बताया कि इसके लिए प्रक्रिया यह है कि जो ग्रहणकर्ता है सबसे पहले उसकी अस्थि मज्जा को आंशिक रूप से नष्ट करना, फिर एंटीबॉडीज़ का उपयोग करके T कोशिका की मात्रा कम करना। T कोशिका ही अंगों को अस्वीकार करती है। इसके बाद उन्होंने किडनी का प्रत्यारोपण किया। साथ में डोनर की अस्थि मज्जा से प्राप्त कोशिकाएं भी ग्रहणकर्ता के शरीर में रोप दी गईं। प्रत्यारोपण के बाद रोगी को दो हफ्तों के लिए I.C.U. में

वैज्ञानिकों की कोशिश है कि जिस व्यक्ति को किसी और का गुर्दा लगाया जाए, उसे आजीवन अपनी प्रतिरोध क्षमता को दबाने के लिए दवाइयां न लेनी पड़ें।

रखा।

जांच करने पर पाया कि रोगी की कोशिका और डोनर की कोशिका ने मिलकर एक मिली-



जुली अस्थि मज्जा का निर्माण कर लिया था। इसके चलते ग्रहणकर्ता के शरीर ने अस्थि मज्जा और गुर्दे, दोनों को स्वीकार कर लिया।

हालांकि यह मिश्रित अवस्था अस्थायी है मगर स्वीकार्यता लंबे समय तक बनी रही। ग्रहणकर्ता का शरीर इस नए अंग को लंबे समय तक 'सहन' करता है और कम से कम पशुओं पर किए गए प्रयोग दर्शाते हैं कि शायद यह स्वीकार्यता हमेशा के लिए हो सकती है।

सैक्स कहते हैं कि इस तकनीक का उपयोग ज़िनोट्रांसप्लांटेशन यानी पशु अंग प्रत्यारोपण में भी किया जा सकता है। इसमें प्रत्यारोपण हेतु जानवरों (जैसे-सुअर) के अंगों का प्रयोग किया जाता है। (स्रोत फीचर्स)